

# भारत में राष्ट्रवाद

प्रथम विश्व युद्ध, खिलाफत एवं असहयोग

सत्याग्रह का विचार

रेल्वे एक्ट

असहयोग ही क्या

आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराएं

शहरों में आंदोलन

ग्रामीण इलाकों में विद्रोह

बागानों में स्वराज

सविनय अवज्ञा की ओर

लोगों ने आंदोलन को कैसे लिया

सविनय अवज्ञा की सीमाएं

सामूहिक अपनेपन का भाव

सत्याग्रह के विचार का मतलब है सत्य की शक्ति पर आश्रय करना है। गांधी जी ने कहा है कि अगर आपको उद्देश्य सच्चा है तो अत्याच के खिलाफ संचार करने में किसी सांख्यिक बल की आवश्यकता नहीं होती।

रेल्वे एक्ट एक कानून के नाम से जाना जाता था। इस कानून के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये जेल में डाल सकते थे। यह कानून राष्ट्रीय आंदोलनों को दबाने के उद्देश्य से तैयार किया था।

हिंद स्वराज (1909) में गांधी जी ने कहा था कि ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल भर के भीतर ब्रिटिश शासन ढह जाएगा और स्वराज की स्थापना हो जाएगी। गांधी जी का सुझाव था कि यह आंदोलन चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए। सबसे पहले लोगों को सरकार द्वारा दी गई पदवियों लौटा देने चाहिए और सरकारी नौकरियों, सेना, पुलिस अदालतों, विद्यालयों परियोजनाओं, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए। अगर सरकार दमन का रास्ता अपनाती है तो व्यापक सविनय अवज्ञा अभियान भी शुरू किया जाए। 1920 की गर्मियों में गांधी जी और शौकत अली आंदोलन के लिए समर्पण जुटाते हुए देश भर में यात्राएं करते रहे। 1920 में कोरसे के नागपुर अधिवेशन में असहयोग कार्यक्रम पर स्वीकृति की मोहर लगा दी गई।

हजारों विद्यार्थियों ने स्कूल-कॉलेज छोड़ दिए। डेटमस्टर्डों और शिक्षकों ने हस्तिके स्वीप दिए। बकीलों ने मुकदमे नहना बंद कर दिए। मद्रास के अलावा ज्यादातर प्रांतों में परिषद चुनावों का बहिष्कार किया गया। विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया, शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई, और विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी। 1921 से 1922 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया था। उसकी कीमत 102 करोड़ से घटकर 57 करोड़ रह गई। लोग अत्याचार काटने को छोड़कर केवल भारतीय कपड़ों पहनने लगे तो भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन भी बढ़ने लगा।

अध में सत्यागी बाबा रामचंद्र किसानों का नेतृत्व कर रहे थे। आंध्र प्रदेश की तुंदन चलायियों में सन 1920 में पुलिस आंदोलन शुरू हो गया। यहां के आदिवासी किसानों का नेतृत्व अन्नपूर्णी सीताराम राजू ने किया। यह गांधी जी के कट्टर समर्थक थे।

1859 के इनलेड इमिग्रेशन एक्ट के तहत बागानों में काम करने वाले मजदूरों को बिना इजाजत बागान से बाहर जाने की छुट नहीं होती थी। जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना तो हजारों मजदूर अपने अधिकारियों की अहंलना करने लगे। उन्होंने बागान छोड़ दिए और अपने घर को चल दिए। उनको जताता था कि अब गांधी राज आ रहा है इसलिए जब तो होक को राष्ट्रीय आंदोलन यहाँ में जमीन मिल जाएगी। लेकिन मैं अपनी मजिल पर नहीं पृथुष पाए। रेलवे और स्टरीमों की इइतलत के कारण ये रास्ते में ही कले रहे गए।

31 जनवरी 1930 को गांधी जी ने वासराज हरविन को 11 मांगों का एक पत्र लिखा। इनमें से नमक पर टैक्स हटाना प्रमुख मांग थी। जब अंग्रेजों ने उनकी मांगों को नहीं माना तो गांधी जी ने नमक यात्रा शुरू कर दी। 6 अप्रैल को उन्होंने दांडी पहुंचकर नमक कानून का उल्लंघन किया और सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत कर दी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में ग्रामीण किसान वर्ग, व्यापारी वर्ग, शहरी मजदूर वर्ग, रेलवे कार्यगारों यह महिलाओं ने बड़ चढ़कर भाग लिया।

गांधी जी ने लुआकून विरोधी आंदोलन शुरू किया। 1930 में अंबेडकर ने दलित एसोसिएशन की स्थापना की। सितंबर 1932 में पूना पैक्ट समझौता हुआ।